

पंडित नारायण राव व्यास : 78 RPM युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कलाकार

कोमल
(शोधार्थी)

डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, शोध निर्देशिका
संगीत एवं ललित कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Email: komalpanchal114@gmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना पद्धति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित रखने और बढ़ावा देने में मदद करती है। भारतीय संगीत में गायन के घरानों में ग्वालियर घराना अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे 'घरानों की गंगोत्री' कहा जाता है। ग्वालियर घराने की पौराणिक भूमि पर सदैव ही नादध्वनि गूंजती रही है। सभी घरानों में ग्वालियर घराना ख्याल गायन के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया। इस घराने के अद्वितीय संगीताचार्यों ने अपनी अनोखी प्रतिभा से संगीत को सुरक्षित एवं जीवित रखा तथा समृद्ध बनाया। ग्वालियर घराने के अद्वितीय संगीताचार्यों में पं० नारायण राव व्यास एक स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हैं जो कि बहुत ही सुप्रसिद्ध गायक एवं ख्याल गायकी के प्रणेता माने गए। प्रस्तुत शोध पत्र ग्वालियर घराने के पण्डित नारायण राव व्यास जी के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषण करता है और उनके द्वारा की गई रिकॉर्डिंग की संख्या से यह ज्ञात होता है कि वे आरपीएम युग के सबसे लोकप्रिय कलाकार रहे हैं। इस शोध पत्र में यह बताने का पूर्णतः प्रयास किया जाएगा कि उनका सांगीतिक जीवन, कार्य, एवं 78RPM रिकॉर्डिंग में किस प्रकार योगदान रहा है और वह किस तरह 78RPM युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कलाकार रहे।



महत्वपूर्ण शब्द: पंडित नारायणराव व्यास, 78 RPM, ग्रामोफोन रिकॉर्ड, ग्वालियर घराना, HMV, रिकॉर्डिंग

How to cite this article:

Komal. 2023. "Pandit Narayan Rao Vyas: 78 RPM Yug ke Sarvadhik Prasiddha Kalakar." *Sangeet Galaxy* 12(2): 126-134. www.sangeetgalaxy.co.in.

पंडित नारायणराव व्यास का जीवन रेखाचित्र:

पंडित नारायणराव व्यास जी ग्वालियर घराने के महान संगीतकारों में से एक थे। उन्होंने अपने 78 RPM ग्रामोफोन रिकॉर्ड के माध्यम से पूरे देश में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को लोकप्रियता बनाने और उसे संरक्षित करने में

महत्वपूर्ण योगदान दिया. "पंडित नारायणराव व्यास जी का जन्म 4 अप्रैल 1902 को कोल्हापुर में हुआ था. कोल्हापुर को "कलापुरी" के नाम से भी जाना जाता है. उनके पिता गणेशपंत पुरोहित थे तथा उन्हें संगीतशास्त्र का समुचित ज्ञान था और वे सितार वादन भी किया करते थे. पं. नारायण राव जी की माता का नाम 'रमा बाई' था."¹ उन दिनों संगीत को व्यवसाय रूप में अपनाने पर हेय दृष्टि से देखा जाता था. संगीत को एक अर्थप्राप्ति के साधन रूप में लेना उस समय महाराष्ट्र में एक सभ्यग्रह के लिए लगभग अनसुना प्रतीत होता था. पंडित नारायण राव व्यास का संगीत में गहरा लगाव था अतः उन्होंने संगीत से आय अर्जन करना मजबूती से स्वीकार कर लिया. विद्वानों और संगीत प्रेमियों के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेने के कारण, इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि शंकर राव व्यास और नारायण राव व्यास दोनों ने शास्त्रीय संगीत को एक संव्यवसाय के रूप में गंभीरता से अपना लिया था.

"पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर 1901 में संगीत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत गंधर्व महाविद्यालय की नींव डाल चुके थे. उन्होंने अपने महाविद्यालय में शिष्यों को उत्कृष्ट संगीत प्रशिक्षण और अच्छे नैतिक मूल्य देने प्रारम्भ किए. पंडित जी ने अपने महाविद्यालय में सभी छात्रों के बीच सबसे प्रतिभाशाली छात्रों का चयन किया, उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित किया और जब वे देश के विभिन्न हिस्सों में अपने कोष-संग्रह के दौरे पर गए थे तब उनको अपने साथ ले गए थे."²

1910 में पं. पलुस्कर और उनके द्वारा चयनित छात्रों के समूह ने कोल्हापुर में संगीत का प्रदर्शन किया एवं अपनी मधुर गायकी से सभी श्रोताओं को प्रभावित किया. यह दोनों भाईयों व्यास-बंधु के लिए सुनहरा अवसर था, जब पं. पलुस्कर ने इनका गायन सुना तो उन्होंने इन दोनों की सांगीतिक क्षमताओं का आकलन कर इन्हें गंधर्व महाविद्यालय में संगीत की शिक्षा देने का निश्चय किया. 1910 में नारायण राव व्यास जी के बड़े भाई को मुंबई के स्कूल में दाखिला कराया गया और तीन साल पश्चात 1913 में नारायण राव व्यास भी पं. पलुस्कर जी की देखरेख में गंधर्व महाविद्यालय के संगीत छात्र बन गए.

"यह वह समय था जब लोगो के पास धन का अभाव रहता था किंतु पंडित विष्णु दिगंबर पुलस्कर जी उस कठिन दौर में भी शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे. पंडित विष्णु दिगंबर पुलस्कर जी ने अपने विद्यालय को चलाने के लिए धन की व्यवस्था की एवं उन्होंने छात्रों को मुफ्त में संगीत की शिक्षा प्रदान की और यहां तक कि उन्हें वास्तविक प्राचीन गुरुकुल शैली में बिना किसी मूल्य के ठहरने और आवास की व्यवस्था एवम् अनेक सुविधाएं प्रदान की.

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, नारायणराव व्यास जी, पंडित दिगंबर जी के पसंदीदा शिष्यों में से उभर कर सामने आए. उनकी सुरीली आवाज के साथ-साथ संगीत में गहरी रुचि और संगीत में शीघ्र पकड़ होने के कारण उन्हें प्रस्तुति देने वाले छात्रों के शिक्षण समूह में सम्मिलित कर दिया. उन्होंने अपने शिक्षण काल में हारमोनियम, तबला और जलतरंग वाद्य की भी शिक्षा ग्रहण की.

1922 में उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय में अपना शिक्षण पूरा किया और उन्हें "संगीत प्रवीण" की उपाधि से सम्मानित किया. अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद दोनों भाई 1922 में अहमदाबाद आ गए और वहां उन्होंने संगीत कला की सेवा के लिए एक संगीत विद्यालय की शुरुआत की. उन्होंने वहां 1922 से 1927 तक उस विद्यालय में संगीत की शिक्षा प्रदान की परंतु नारायणराव व्यास जी की महत्वाकांक्षा एक सफल प्रस्तुति पेश करने वाले संगीत कलाकार बनने की थी, इसलिए नारायणराव व्यास जी ने 1927 में एक बड़े क्षेत्र की खोज में मुंबई की तरफ प्रस्थान किया. जबकि शंकरराव व्यास ने उसी संगीत संस्था से जुड़े रहने और जीवन भर छात्रों को संगीत शिक्षण देने का निश्चय किया. इसलिए नारायणराव व्यास बंबई में बस गए और उन्होंने पंजाब, यूपी, सिंध जैसे अन्य कई राज्यों में अपनी संगीत कला का प्रदर्शन किया. पंडित नारायण राव व्यास जी ने जालंधर की वार्षिक संगीत परिषद में भी तीन बार प्रस्तुति दी और अन्य कई पुरस्कार व मेडल भी प्राप्त किए. पंडित नारायणराव व्यास जी को रागों पर उनकी गहरी पकड़ और सुरीली आवाज के लिए श्रोताओं द्वारा प्रशंसा प्राप्त हुई. पंडित जी बिना बाधाओं के लोकप्रियता और प्रसिद्धि प्राप्त करते चले गए और इनके इसी प्रकार सांगीतिक प्रदर्शन से ग्रामोफोन कंपनी की दृष्टि उन पर पड़ी. भारत में ग्रामोफोन उस समय बहुत अधिक लोकप्रिय था. नारायणराव व्यास जी के लिए अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का युग पूरे उन्नति पर था तथा 1932 में नारायणराव व्यास अपनी लोकप्रियता के शिखर पर सवार थे. वे आकाशवाणी के भी सबसे लोकप्रिय प्रसारक माने जाते रहे. वह आकाशवाणी के साथ-साथ ग्रामोफोन कंपनी के साथ जुड़ते चले गए. ग्रामोफोन कंपनी में अपने रिकार्ड्स तैयार करते रहे. यह उस समय उनके जीवन का सुनहरा दौर था.

"अपने पूज्य गुरु के पदचिन्हों पर चलते हुए उन्होंने अपने बड़े भाई पं. शंकरराव व्यास और प्रो वसंतराव राजोपाध्याय के साथ 1937 में दादर, बॉम्बे में एक संगीत अकादमी, व्यास संगीत विद्यालय की स्थापना की और उनके बेटे विद्याधर व्यास सहित कई शीर्ष संगीतकारों का निर्माण किया. पं० नारायणराव व्यास को मल्हार, मालकोष, दुर्गा, गौड़सारंग, बागेश्वरी, तोड़ी और मालगूजरी अधिक प्रिय हैं. आपके गायन में दोष रहित आवाज, स्वर का नीचा, ऊंचा एवं मध्यम करना, शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण इत्यादि ऐसी बातें हैं, जो श्रोताओं को आसानी से आकर्षित कर लेती हैं."³

संगीत एक ऐसी कला है जो निरंतर समय के साथ चलती रहती है व मनुष्य के अंतिम समय तक साथ रहती है , जब तक कि मानव स्मृति या किसी तकनीक द्वारा उसे पुनः उत्पादन द्वारा संरक्षित नहीं किया जाता. बीसवीं शताब्दी के पहले पांच दशकों के दौरान भारतीय संगीत का रिकॉर्ड 78 आरपीएम प्रारूप में किया गया. ये रिकॉर्डिंग प्रौद्योगिकी और रचनात्मकता के बीच एक आकर्षक समन्वय प्रस्तुत करता है. उस काल में रिकॉर्ड ही एकमात्र ऐसा माध्यम था जिसमें हमारे संगीत को परिचालित और संरक्षित किया जा सकता था.

हम यहाँ पर रिकॉर्डिंग तकनीक के बारे में चर्चा करें तो, 1925 से पहले सभी 78 RPM को गाने या ध्वनि-विस्तारक में बोलने वाले कलाकार के माध्यम से रिकॉर्ड किया जाता था, उनकी आवाज की शक्ति सीधे रिकॉर्डिंग

स्टाइलस को कंपित करती है और इस प्रकार मास्टर डिस्क के मोम को काटती है. संग्राहक करने वाली इस डिस्क को "ध्वनिक" रिकॉर्डिंग कहते हैं.

दूसरी ओर संगीतकारों के रिकॉर्ड्स की डिस्क-प्रस्तुत तकनीक की सीमा सिर्फ 3 मिनट तक थी. सामान्यतः 10 इंच आकार वाले 78 RPM डिस्क जो भारतीय संगीत की सुधारवादी प्रकृति के साथ प्रस्तुतिकरण करना और भी कठिन था. लेकिन संगीतकारों ने इस चुनौती को एक अच्छे अवसर की तरह लिया जो प्रौद्योगिकी और रचनात्मकता को मिलाने का मुख्य कारण बना, जो संगीतजगत की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है. इन रिकॉर्डिंग तकनीकी के माध्यम से सभी संगीत प्रेमी आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के उन महान कलाकारों को सुन सकते हैं. इन सभी कलाकारों ने 78 आरपीएम प्रारूप की सीमा के अंतर्गत किस तरह की रिकॉर्डिंग्स की है, यह अनुमान भी हम इसके द्वारा लगा सकते हैं. "अनेक कलाकारों ने अपनी गायकी व वादन के प्रारूप रिकॉर्ड तैयार किए, लेकिन इन सभी महान कलाकारों में मुख्य पंडित नारायणराव व्यास (1902-1984) एकमात्र ऐसे कलाकार थे, जिनके रिकॉर्ड उस समय के सबसे ज्यादा बिकने वाले रिकार्ड की सूची में सम्मिलित थे, और उन्होंने HMV कंपनी को अपने फुटकर बिक्री विक्रेताओं के माध्यम से प्रचार किया, जिन्होंने अपने सूचीपत्र के सभी संस्करणों में उनकी तस्वीरें प्रकाशित कीं."⁴

विद्युत युग का आरंभ 1925-47 तक माना जाता है. इलेक्ट्रिकल रिकॉर्डिंग का पहली बार उपयोग 1925 में किया गया था. लगभग 1925 के बाद, 78 RPM पर कलाकारों द्वारा गायन या माइक्रोफोन और एम्पलीफायर में बोलते हुए रिकॉर्ड किया गया, जिसने मास्टर रिकॉर्ड को काट दिया. इसने ध्वनि की एक विस्तृत श्रृंखला को रिकॉर्ड करने की अनुमति दी. इस प्रक्रिया द्वारा किए गए रिकॉर्ड को "इलेक्ट्रिकल" रिकॉर्डिंग कहा जाता है. संग्राहक इन डिस्कों को या तो सुनकर या लेबल के करीब रिकॉर्ड सतह में छोटे निशान के माध्यम से पहचान सकते हैं. पहली विद्युत रिकॉर्डिंग 1925 में जारी की गई थी.⁵

विभिन्न 78 RPM सेट, विशेष रूप से इलेक्ट्रिकल सेट, तीन साइड कपलिंग तक जारी किए गए थे:

- मैनुअल साइड
- स्लाइड ऑटोमैटिक
- ड्रॉप ऑटोमैटिक

पंडित नारायणराव व्यास जी ने 1929 में अपना पहला 78 RPM रिकॉर्ड किया. उन्होंने 1929 से 1955 तक 78 RPM प्रारूप में रिकॉर्ड की सबसे बड़ी संख्या 150 से भी अधिक रिकार्ड्स तैयार किए, जो की उस समय के सभी कलाकारों के बीच रिकॉर्ड की सबसे बड़ी संख्या पंडित जी के नाम थी. ये रिकॉर्ड साढ़े तीन मिनट की अवधि के होते थे. पंडित नारायण राव व्यास जी की डिस्क 10 अथवा 12 इंच आकार की कैसेस्ट होती थी, जो 'भंगुर शेलैक' से बनी होती थी. पं. नारायणराव व्यास ने मराठी और गुजराती भाषा में भी गायन की प्रस्तुतियाँ दी है. उन्होंने अपने भाई शंकरराव व्यास द्वारा रचित मराठी बंदिशों में कुछ मराठी भजन गाए हैं.⁶

1930 के दशक के प्रारंभ तक, रिकॉर्डिंग तकनीक में काफी विकास हुआ था. कच्चे यांत्रिक प्रक्रियाओं ने वैक्यूम ट्यूबों और चुंबकीय टेप द्वारा सुगम नई उच्च-निष्ठा विद्युत रिकॉर्डिंग का मार्ग प्रशस्त किया.

हालाँकि, 78 आरपीएम शेलैक रिकॉर्ड की निष्ठा और रिकॉर्डिंग की लंबाई दोनों के संदर्भ में गंभीर सीमाएँ थीं. 78 आरपीएम के प्रत्येक पक्ष में 5 मिनट से कम का समय भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत दोनों के लिए समस्याग्रस्त साबित हुआ, और रिकॉर्ड कंपनियों ने लंबे समय की अवधि के प्लेबैक के लिए विकल्प नहीं था.

पण्डित नारायण राव व्यास जी ने अपने ग्रामोफोन रिकॉर्ड में प्रत्येक बंदिश को एक बहुत ही सुन्दर 'आलाप', 'तान' और आकर्षक 'बोल तान' के साथ बांध कर गायन के स्वरूप में संपन्न किया. उन्होंने अपनी सभी रिकॉर्डिंग्स में राग की शुद्धता को बनाए रखा. पंडित जी एक राग को केवल साढ़े तीन मिनट में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में कुशल कलाकार थे. रिकॉर्ड्स पर उनका संगीत पूरी तरह से फैला हुआ था और उन्हें सच्चे और आदर्श हिंदुस्तानी संगीत प्रस्तुतिकरण की उत्कृष्ट कृति के रूप में माना जाता है. उन्होंने अनेक श्रोताओं को संगीत समझाने के लिए प्रेरित किया.

कुछ उनकी प्रसिद्ध रिकॉर्ड्स :-

1. अरे: साखि मोरि रम झुम-राग दुर्गा
2. नीर भरन कैसे जाऊं - राग तिलक कमोद
3. तुम जागो मोहन प्यारे - राग भैरव
4. नीर भरन मैं तो चली - राग मालकौंस
5. बालम मेरी सुनिहो - राग मांड
6. बहुत सही तोरी सांवरिया- राग भैरवी

वह अपनी वृद्धावस्था में भी बहुत सक्रिय थे. LP/EP युग के दौरान, उन्होंने लंबे समय की गायन अवधि के रिकॉर्ड तैयार किये, जिनमें से एक उनके गुरु बंधु पं. विनायकराव पटवर्धन जी के साथ राग मालगुंजी में एक युगल गीत प्रस्तुत किया. मार्च 1934 में उनका सबसे लोकप्रिय रिकॉर्ड जारी किया गया था :-

मिश्र काफ़ी भजन - "राधे कृष्ण बोल मुखसे".

पंडित नारायण राव व्यास जी को प्रचार के रूप में एक तस्वीर में पगड़ी पहने हुए प्रस्तुत किया गया था.⁷ उनकी प्रसिद्ध लोकप्रियता को देखते हुए HMV कंपनी ने उन्हें 'गोल्ड मेडल' से सम्मानित किया.⁸

यह अतीव आश्चर्यजनक प्रतीत होता है कि आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व भी पंडित नारायण राव व्यास सरीखे दिग्गज कलाकार की 78RPM वाली 150 से भी अधिक रिकॉर्डिंग्स की गईं. प्रस्तुत सूची में इनकी कुछ रिकॉर्डिंग्स का वर्णन निम्नलिखित हैं⁹:-

क्र. सं.	रिकॉर्ड सं.	राग
1.	P 13296	भैरव
2.		दुर्गा
3.		खमाज मांड
4.	P13304	अड़ाना
5.		देसी तिलंग
6.	P13366	मिश्र पीलू ठुमरी
7.		मालकौंस
8.	P 13377	मिश्र मांड
9.		बहार
10.	P 13394	गांधारी
11.		भैरवी
12.	P13428	मिश्र काफ़ी
13.	P13447	रागसागर
14.	N 3364	काफ़ी
15.		भैरवी
16.	N 4118	झंगला दादरा
17.		जोगिया
18.	N 4138	आसा
19.		बागेश्री
20.	N 4155	खमाज
21.	N 4177	कामोद
22.		मियां मल्हार
23.	N 5049	सिंध काफ़ी
24.	N 5059	यमन कल्याण
25.		जीवनपुरी
26.	N5102	पीलू जिल्हा
27.		भैरवी
28.	N 5184	बागेश्री
29.		मिश्र पीलू
30.	N 5224	खमाज
31.		जौनपुरी
32.	N 5316	हमीर
33.		मिश्र कल्याण
34.	N 5396	जोगी

35.		भैरवी
36.	N5600	पटदीप
37.		झिंझोटी
38.	N 5605	बसंत
39.		गौड़ मल्हार
40.	P 13458	ललित
41.		मालगुंजी
42.	P 13503	गौड़ सारंग
43.		तोड़ी तराना
44.	P 13520	खमाज
45.		बिलावल
46.	P 13521	भैरव
47.		देस
48.	P 13530	झिंझोटी
49.	C1932	विभास
50.	Twin FT 884	सिंध काफी
51.		मांड
52.	N 5633	शंकरा
53.		खमाज मांड ठुमरी
54.	N 5638	भूपाली
55.		भूपाली
56.		तिलक कामोद
57.	N 5658	श्री
58.		कान्हडा भजन
59.	HT 12	तोड़ी
60.		तोड़ी
61.	Twin FT 2970	झिंझोटी
62.	N 5681	भीमपलासी
63.		होरी काफी
64.	N5693	सारंग
65.		पहाड़ी भजन
66.	N 5698	पीलू ठुमरी
67.		जयजयवंती
68.	HT 26	केदार
69.		केदार

70.	N 5721	बिहाग
71.		बृंदाबनी सारंग
72.	N 5725	बहार
73.		भैरवी
74.	N 5733	सोहनी
75.		दुर्गा
76.	Twin FT 5090	तिलंग
77.		मालकौंस ध्रुपद
78.	NH 5741	नायकी कान्हडा
79.		खमाज ठुमरी
80.	N 5766	मुल्तानी
81.		मुल्तानी
82.		गारा
83.	N 5772	भवानी
84.		कौशिया भजन
85.	N 5788	सिहेंद्र मध्यम
86.		पूर्वी
87.	N 5797	देस
88.	C1934-5	पूरिया
89.	N5823	तिलंग
90.		भैरवी
91.	N5831	सिंदूरा
92.		आसा मांड
93.	N 5890	खंभावती
94.		भिन्न षड्ज
95.	HT 49	मालगुंजी

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप से यह कह सकते हैं कि पण्डित नारायण राव व्यास जी का व्यक्तित्व एवम् कर्तृत्व जीवन बहुत ही रोमांचित और आकर्षक रहा है। इस तरह पंडित जी की गायकी ने शास्त्रीय संगीत प्रेमी श्रोताओं को अपनी गायकी से जोड़े रखा है क्योंकि उनकी शास्त्रीयता न तो गायकी को बोझिल बनाती थी और न ही वे अपनी किसी राग बद्ध रचना में राग के चलन को अधूरा छोड़ते थे। उनका सांगीतिक जीवन अपने गुरु की सेवा, निष्ठा, साधना के साथ जुड़ा रहा है तथा गुरु के मार्गदर्शन पर ही वह संगीत को उच्च कोटि पर लेकर गए और उन्होंने भिन्न –भिन्न क्षेत्र में संगीत में अपनी सफल प्रस्तुति प्रदान की। पंडित नारायण राव व्यास जी घराना परंपरा को सुचारू रूप से चलाते हुए रिकॉर्डिंग्स के युग में भी एक चमकते हुए सितारे की तरह उभर कर सामने आए। उन्होंने इस गायकी का

संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार किया। गायकी का मूल रूप सुरक्षित रखते हुए उसको नए आयाम दिए हैं। उन्होंने 78RPM युग में अपने 150 से भी अधिक गीत भिन्न-भिन्न रागों में रिकॉर्ड किए। वह केवल खयाल गायक ही नहीं थे, टप्पा, ठुमरी, चतुरंग, तराना, भजन, त्रिवट, आदि गायन शैलियों पर भी उनका सम्मानाधिकार था। वह अपने गायन शैली में ग्वालियर की अष्टांग गायकी का प्रयोग भली-भाँति करते थे। अतः हम यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत सूची में अधुन प्रसिद्ध रागों के अतिरिक्त अनेक ऐसे राग भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं जो उस युग में प्रचलित थे। निश्चय ही पण्डित नारायण राव व्यास उस युग के श्रेष्ठतम महान कलाकारों में से मुख्य थे। अंत में पंडित जी के संपूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका जीवन संगीत के लिए समर्पित रहा, उनका जन्म ही संगीत की तपस्या व प्रचार-प्रसार के लिए हुआ था।

सन्दर्भ:

1. खुराना, शन्नो. *खयाल गायकी में विविध घराने*. नई दिल्ली: सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स.
2. पराङ्कर, आलोक. *नाद रंग*. लखनऊ: स्वामी प्रकाशन, अंक-3, जुलाई, 2018
3. गर्ग, लक्ष्मीनारायण. *हमारे संगीत रत्न*, हाथरस पब्लिकेशन, पेज नं. 219
4. *Vageeshwari Journal* Vol. XXIX, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi, March 2016, Page No. 123 (ISSN: 0975-7872)
5. <https://web.library.yale.edu/cataloging/music/historyof78rpms> (23/04/2023, Time 23:48)
6. <https://courses.nus.edu.sg/course/ellpatke/miscellany/music.htm> (23/04/2023, Time 23:36)
7. संगीत नाटक अकादमी (दिल्ली) द्वारा प्राप्त जानकारी
8. गर्ग, लक्ष्मीनारायण. *हमारे संगीत रत्न*. हाथरस पब्लिकेशन, पेज नं. 219
9. <https://courses.nus.edu.sg/course/ellpatke/Miscellany/vyas.htm> Time 23:05, Date: 01/04/2023

Webliography:

1. https://youtu.be/w6UxqIO_YtA
2. <https://youtu.be/URIQ8HI3wqM>
3. <https://youtu.be/zKjufM2EdRo>
4. <https://youtu.be/E1BHxQ6ZsNc>
5. <https://youtu.be/-pg4Py648NE>